eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

पूर्वांचल में डेयरी पशु स्वास्थ्य समस्याओं का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. रमन प्रकाश[1], भूपेंद्र कुमार यादव[2]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर– भूगोल विभाग, भारतीय महाविद्यालय, फर्रुखाबाद
[2]शोधार्थी (नेट–जे.आर.एफ)– भूगोल विभाग, भारतीय महाविद्यालय, फर्रुखाबाद, (छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर)

Received: 25 November 2025 Accepted & Reviewed: 28 November 2025, Published: 30 November 2025

Abstract

भारत की अर्थव्यवस्था में पशुपालन का महत्वपूर्ण स्थान है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में यह कृषि के पूरक के रूप में आजीविका का प्रमुख स्रोत है। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में डेयरी पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है, परंतु पशु स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ इस क्षेत्र के डेयरी उद्योग के विकास में प्रमुख बाधा बन रही हैं। इस शोध–पत्र में पूर्वांचल के विभिन्न जिलों में डेयरी पशुओं की स्वास्थ्य समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि यहाँ के पशुओं को मुख्यतः संक्रामक रोग (जैसे खुरपका–मुंहपका, गलघोंटू, ब्रुसेलोसिस), परजीवी रोग, पोषण की कमी, एवं स्वच्छता की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सरकारी पशु चिकित्सा सेवाओं की सीमित पहुँच, प्रशिक्षण की कमी, एवं पारंपरिक पद्धतियों पर अत्यधिक निर्भरता इन समस्याओं को और बढ़ा देती है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि यदि पशु स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, पशुपालकों को वैज्ञानिक जानकारी का प्रसार, एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए तो पूर्वांचल का डेयरी क्षेत्र उल्लेखनीय प्रगति कर सकता है।

मुख्य शब्दः डेयरी–पशु स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा सेवाएँ, पशुधन प्रबंधन, पशु–पोषण, रोग नियंत्रण कार्यक्रम।

Introduction

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन का स्थान सदैव केंद्रीय रहा है। कृषि के साथ पशुपालन भारतीय किसान की आजीविका का अभिन्न अंग है, जो न केवल अतिरिक्त आय का स्रोत है बल्कि पोषण सुरक्षा, जैविक खाद, और कृषि प्रणाली के स्थायित्व में भी योगदान देता है। भारत आज विश्व का सर्वाधिक दूध उत्पादक देश है, और इस उत्पादन में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी सर्वाधिक है।

उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल क्षेत्र कृ जिसमें गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, बलिया, मऊ, आजमगढ़, जौनपुर, वाराणसी, भदोही, गाजीपुर, मिर्जापुर एवं सोनभद्र जैसे जिले सम्मिलित हैं कृ अपनी जनसंख्या घनत्व, कृषि–प्रधान जीवनशैली और परंपरागत पशुपालन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के ग्रामीण परिवारों में से अधिकांश किसी न किसी रूप में डेयरी पशुपालन से जुड़े हुए हैं।

पशु स्वास्थ्य का स्तर न केवल दूध उत्पादन को प्रभावित करता है बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, परिवार की आय, और जन–स्वास्थ्य (च्नइसपब भ्मंसजी) पर भी सीधा प्रभाव डालता है। उदाहरणार्थ, ब्रुसेलोसिस और क्षय रोग जैसे रोग मनुष्यों में भी फैल सकते हैं, जिससे यह केवल पशु स्वास्थ्य की नहीं बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य की समस्या बन जाती है। अतः "एक स्वास्थ्य" (व्दम भ्मंसजी) की अवधारणा कृ जिसमें मनुष्य, पशु और पर्यावरण के स्वास्थ्य को एक साथ देखा जाता है कृ इस संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

पूर्वांचल के डेयरी पशुपालन तंत्र में एक और बड़ी समस्या है पशु चिकित्सा सेवाओं की सीमित पहुँच। ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर एक ब्लॉक में केवल एक या दो पशु चिकित्सालय होते हैं, जिनकी भौगोलिक दूरी 8द्10 किमी तक होती है। इससे आपातकालीन स्थितियों में पशुओं को समय पर उपचार नहीं मिल पाता। दूसरी ओर, पशुपालकों की वैज्ञानिक जानकारी और जागरूकता का स्तर भी निम्न है; अधिकतर किसान परंपरागत ज्ञान या ″झोला–छाप″ चिकित्सकों पर निर्भर रहते हैं। इससे रोगों का समय पर निदान और नियंत्रण कठिन हो जाता है।

डेयरी क्षेत्र में स्थानीय नस्लों और क्रॉसब्रीड नस्लों दोनों की उपस्थिति पाई जाती है। स्थानीय नस्लें रोग प्रतिरोधक होने के बावजूद कम उत्पादन देती हैं, जबकि विदेशी या संकर नस्लें अधिक दूध देती हैं परंतु जलवायु एवं रोग–जनित तनावों के प्रति संवेदनशील होती हैं। इन परिस्थितियों में पशु स्वास्थ्य प्रबंधन एक बहुआयामी चुनौती के रूप में उभरता है।

अध्ययन का उद्देश्य (Objective of Study)

1. डेयरी पशुओं में प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करना।
2. इन समस्याओं के कारणों और प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. पशुपालकों की जागरूकता और पशु स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता का मूल्यांकन करना।
4. सुधार हेतु संभावित उपाय सुझाना।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय (Study Area)

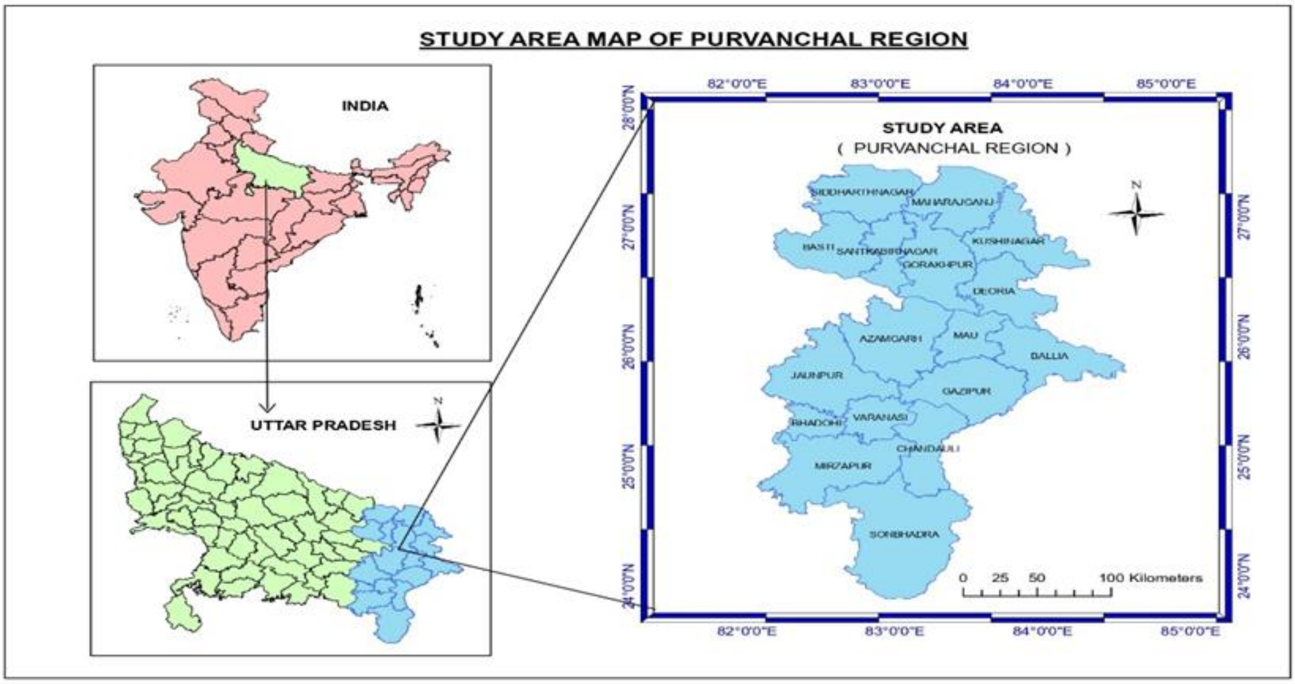

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल क्षेत्र राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र पश्चिम में अयोध्या मंडल से लेकर पूर्व में बिहार की सीमा तक फैला हुआ है और गंगा, घाघरा, सरयू तथा राप्ती नदियों के उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में विस्तृत है, जो कृषि और पशुपालन दोनों के लिए अत्यंत अनुकूल माने जाते हैं। पूर्वांचल में लगभग 28 जिलों को सम्मिलित किया जाता है, जिनमें गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, बलिया, मऊ, आजमगढ़, जौनपुर, वाराणसी, भदोही, गाजीपुर, मिर्जापुर और सोनभद्र प्रमुख हैं। लगभग 75,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल और छह करोड़ से अधिक जनसंख्या वाला यह क्षेत्र घनी आबादी और कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है। यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधीय आर्द्र प्रकार की है, जहाँ औसत तापमान 10°C से 38°C और वार्षिक वर्षा 1000 से 1200 मिमी के बीच होती है। यह मौसम डेयरी पशुपालन के लिए अनुकूल होते हुए भी अत्यधिक नमी और गर्मी के कारण परजीवी व संक्रामक रोगों की संभावना बढ़ा देता है। क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित है, और अधिकांश छोटे एवं सीमांत किसान अपनी आय का पूरक स्रोत पशुपालन को मानते हैं। महिलाओं की डेयरी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भागीदारी इसे महिला सशक्तिकरण का भी माध्यम बनाती है। यहाँ प्रमुख रूप से देसी गाय (साहीवाल, थारपारकर), भैंस (मुर्रा, भदावरी) और क्रॉसब्रीड नस्लें पाई जाती हैं। राष्ट्रीय पशुधन गणना (2020) के अनुसार, उत्तर प्रदेश के कुल पशुधन का लगभग 35–40% हिस्सा पूर्वांचल क्षेत्र में है, परंतु औसत दूध उत्पादन राष्ट्रीय औसत से 20 से 25% कम पाया गया है, जिसका मुख्य कारण पोषण और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ हैं। पशु स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से यह क्षेत्र अभी भी पिछड़ा है कृ प्रत्येक ब्लॉक में औसतन 1 से 2 पशु चिकित्सालय ही उपलब्ध हैं, प्रशिक्षित पशु चिकित्सकों की कमी है, दवाओं की उपलब्धता सीमित है, और ग्रामीण क्षेत्रों में दुर्गमता के कारण टीकाकरण एवं रोग–निवारण कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप, अनेक पशुपालक परंपरागत या गैर–प्रशिक्षित चिकित्सकों पर निर्भर रहते हैं, जिससे रोगों की जटिलता और मृत्यु दर में वृद्धि होती है।

अध्ययन की कार्यविधि (Methodology)

यह शोध एक वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन है, जिसमें प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

(क) प्राथमिक आंकड़े

पूर्वांचल के चयनित जिलों (गोरखपुर, बलिया, वाराणसी, मऊ, और सोनभद्र) में 150 पशुपालकों से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई। इन प्रश्नों में पशुओं की नस्ल, टीकाकरण की स्थिति, सामान्य रोगों की आवृत्ति, पशु चिकित्सा सेवा की उपलब्धता, और पशुपालकों की स्वास्थ्य जागरूकता शामिल थी।

(ख) द्वितीयक आंकड़े

राज्य पशुपालन विभाग, पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (IVRI) राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) एवं संबंधित पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया।

(ग) विश्लेषण पद्धति

संग्रहित आँकड़ों का वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण (Descriptive Statistics) के माध्यम से अध्ययन किया गया है।

प्रमुख पशु स्वास्थ्य समस्याएँ (Major Dairy Animal Health Problems)

(1) संक्रामक रोग (Infectious Diseases)

पूर्वांचल के डेयरी पशुओं में सबसे अधिक प्रचलित रोग हैं कृ

- खुरपका–मुंहपका : यह अत्यधिक संक्रामक रोग है जो दूध उत्पादन को 40–60% तक घटा देता है।
- गलघोंटू : मानसून में फैलने वाला बैक्टीरियल रोग जो भैंसों में आम है।
- ब्रुसेलोसिसः प्रजनन क्षमता घटाता है और मनुष्यों में भी फैल सकता है।

(2) परजीवी रोग (Parasitic Diseases)

अधिक आर्द्रता और चराई भूमि की गंदगी के कारण जूँ, कीड़े, और आंतरिक परजीवी तेजी से फैलते हैं। इससे पशुओं में वजन घटाव, एनीमिया और कमजोरी होती है।

(3) पोषण संबंधी समस्याएँ (Nutritional Deficiencies)

पशुपालकों द्वारा संतुलित आहार न देने से कैल्शियम, फॉस्फोरस और विटामिन की कमी पाई जाती है। इससे दूध उत्पादन घटता है, बछड़ों की वृद्धि धीमी होती है, और बार–बार रोग होने लगते हैं।

(4) प्रजनन विकार (Reproductive Disorders)

कुपोषण और संक्रमण के कारण बाँझपन (Infertility), गर्भपात, एवं प्रसवोत्तर संक्रमण आम समस्याएँ हैं।

(5) पर्यावरणीय और स्वच्छता संबंधी समस्याएँ

गंदे गोठान, दूषित पानी, एवं अपर्याप्त साफ–सफाई रोग फैलाने में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

समस्याओं के कारण (Causes of Animal Health Problems)

•पशु चिकित्सालयों की अपर्याप्त संख्याः

प्रत्येक ब्लॉक में औसतन केवल 1–2 पशु चिकित्सालय हैं, जो पर्याप्त नहीं हैं।

•प्रशिक्षित पशु चिकित्सकों की कमीः

ग्रामीण स्तर पर अधिकतर उपचार 'झोला–छाप' चिकित्सकों द्वारा किया जाता है।

•जागरूकता का अभावः

अधिकतर पशुपालक रोग–निवारण की बजाय उपचार पर ध्यान देते हैं।

•टीकाकरण कार्यक्रमों का कमजोर क्रियान्वयनः

दूरदराज के गाँवों तक टीके नहीं पहुँच पाते।

•आहार प्रबंधन की कमीः

पशुपालक चारे की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देते।

•सरकारी योजनाओं का सीमित प्रभावः

राष्ट्रीय गोकुल मिशन या पशुधन स्वास्थ्य योजना जैसी योजनाएँ अभी तक पूर्ण रूप से क्रियान्वित नहीं हैं।

पशुपालकों की जागरूकता और सहभागिता (Awareness and Participation)

अध्ययन से पता चला कि केवल 38% पशुपालक नियमित टीकाकरण करवाते हैं। लगभग 60% ने कहा कि उन्हें रोग–निवारण के बारे में जानकारी नहीं है। पशु स्वास्थ्य शिविरों में भाग लेने वालों का प्रतिशत मात्र 25% पाया गया। यह आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि तकनीकी जानकारी के प्रसार की भारी आवश्यकता है।

सरकारी एवं गैर–सरकारी प्रयास (Government and NGO Initiatives)

- राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड द्वारा डेयरी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।
- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP) के तहत थ्डक और ब्रुसेलोसिस नियंत्रण हेतु टीकाकरण अभियान चलाए जा रहे हैं।
- गोकुल मिशन के माध्यम से देशी नस्लों के संवर्द्धन का प्रयास किया जा रहा है।
- कुछ NGOs (जैसे BAIF, Heifer International) ग्रामीण क्षेत्रों में पशु स्वास्थ्य और पोषण प्रशिक्षण दे रहे हैं।

फिर भी इन योजनाओं का लाभ सीमित पशुपालकों तक ही पहुँच पाता है।

अध्ययन के निष्कर्ष (Findings)

1. पूर्वांचल के 70% डेयरी पशु किसी न किसी रोग से प्रभावित पाए गए।
2. दूध उत्पादन में औसतन 25–30% हानि स्वास्थ्य कारणों से होती है।
3. पशु चिकित्सालयों की औसत दूरी 8–10 किमी है, जिससे आपातकालीन सेवा कठिन है।
4. डेयरी उद्योग की प्रगति में पशु स्वास्थ्य सबसे बड़ी बाधा बनी हुई है।
5. स्थानीय नस्लें रोग प्रतिरोधी हैं, परंतु उत्पादन कम है; जबकि क्रॉसब्रीड नस्लें उत्पादनशील हैं परंतु रोग–संवेदनशील।

चर्चा (Discussion)- पूर्वांचल का डेयरी क्षेत्र प्रचुर क्षमता रखता है, परंतु स्वास्थ्य समस्याएँ इसकी प्रगति को रोक रही हैं। यह स्पष्ट है कि केवल चिकित्सा सुविधाएँ बढ़ाने से समाधान नहीं होगा, जब तक पशुपालक स्तर पर व्यवहारिक परिवर्तन नहीं आते। रोगों का समय पर निदान, टीकाकरण, स्वच्छता और पोषण सुधार इस क्षेत्र में क्रांति ला सकते हैं। इसके अलावा, पशु स्वास्थ्य को कृषि और ग्रामीण विकास नीति से जोड़ना आवश्यक है। "एक स्वास्थ्य" (व्दम भ्मंसजी) दृष्टिकोण, जिसमें मनुष्य, पशु और पर्यावरण सभी को समान रूप से जोड़ा जाए, दीर्घकालिक समाधान प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव (Conclusion and Suggestions)

निष्कर्षः– पूर्वांचल के डेयरी पशुओं का स्वास्थ्य अत्यधिक संवेदनशील स्थिति में है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बहुआयामी हैं कृ संक्रामक रोगों से लेकर पोषण की कमी तक। सरकारी सेवाएँ सीमित हैं, और जागरूकता का अभाव स्थिति को और जटिल बनाता है।

सुझावः–

1. प्रत्येक पंचायत स्तर पर मोबाइल पशु चिकित्सा इकाई स्थापित की जाए।
2. नियमित टीकाकरण एवं कृमिनाशक कार्यक्रम सुनिश्चित किए जाएँ।
3. पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण शिविर अनिवार्य किए जाएँ।
4. स्थानीय चारा उत्पादन को प्रोत्साहन मिले, ताकि पोषण की कमी दूर हो।
5. पशु बीमा योजनाएँ सरल और सुलभ बनाई जाएँ।
6. महिला पशुपालकों की भागीदारी बढ़ाई जाए, क्योंकि डेयरी कार्यों में उनकी भूमिका प्रमुख है।
7. NGO एवं निजी क्षेत्र के सहयोग से पशु स्वास्थ्य सेवाओं का विकेंद्रीकरण किया जाए।

संदर्भ सूची (References)-

1. National Dairy Development Board (NDDB). (2023). Annual Report 2022–23. Anand, Gujarat: NDDB Publications.
2. Indian Veterinary Research Institute (IVRI). (2022). Annual Research Review Report. Izatnagar, Bareilly: ICAR–IVRI.
3. Department of Animal Husbandry, Government of Uttar Pradesh. (2023). Livestock Health and Disease Control Report 2022–23. Lucknow: Animal Husbandry Directorate.
4. Singh, R., & Sharma, A. (2021). Dairy development in Eastern Uttar Pradesh: Challenges and prospects. Journal of Rural Studies, 38(2), 145–160.
5. Food and Agriculture Organization (FAO). (2022). Animal health and food security in South Asia. Rome: FAO Publications.
6. Government of India. (2024). National Animal Disease Control Programme (NADCP) Report 2023–24. New Delhi: Department of Animal Husbandry & Dairying.
7. Kumar, V., & Pandey, S. (2020). Livestock health management in rural Uttar Pradesh: Issues and policy implications. Indian Journal of Animal Research, 54(9), 1081–1088.
8. Yadav, R., & Singh, P. K. (2021). Role of veterinary services in improving dairy productivity in Eastern India. International Journal of Livestock Policy Studies, 12(1), 55–67.
9. World Bank. (2023). Livestock and livelihoods: Enhancing animal health in South Asia. Washington, DC: World Bank Publications.
10. Chatterjee, A., & Das, S. (2022). Climate change and dairy animal health in Indo-Gangetic plains: Emerging risks and adaptation. Environmental Sustainability Journal, 5(4), 321–335.